संत मत के आदि प्रवर्तक कबीर साहब ने यद्यपि अपनी बानी में अनामी धाम तक का उल्लेख किया है किन्तु उपदेश सत्तनाम तक ही सीमित रक्खा। उनके बाद अधिकतर संतों ने अपने बचन बानी में घट का भेद देते समय सत्तनाम के आगे का उल्लेख नहीं किया और इस प्रकार सत्तलोक के बाद अंतिम तीन मुक़ाम, अलख लोक, अगम लोक और अनामी पद (जिसको अकह और अपार भी कहा है) तत्कालीन संतमतावलम्बियों को भी विस्मृत हो गये। तुलसी साहब ने सत्तनाम के बाद अलख अगम और अनामी धाम का उल्लेख अपनी बाणी में फिर से किया, यद्यपि उपदेश सत्तनाम तक ही सीमित रक्खा। केवल कुछ अधिकारी पुरुषों को ही आगे के तीन लोकों का भेद प्रदान किया।

उदाहरण के रूप में कबीर साहब और तुलसी साहब के कुछ शब्द नीचे उद्धृत किए जाते हैं।

कर नैनों दीदार महल में प्यारा है ।। टेक ।।
काम क्रोध मद लोभ बिसारो,
सील संतोष छिमा सत धारो ।
मद्द मांस मिथ्या तजि डारो,
हो ज्ञान घोड़े असवार भरम से न्यारा है ।। १ ।।

धोती नेती बस्ती पाओ,
आसन पदम जुगल ले आओ।
कुम्भक कर रेचक करवाओ,
पहले मूल सुधार कारज हो सारा है ।। २ ।।

मूल कँवल दल चतुर बखानो,
कलिंग जाप लाल रंग मानो ।
देव गनेस तहँ रोपा थानो,
ऋध सिध चँवर ढुलाता है ।। ३ ।।

स्वाद चक्र षट दल विस्तारो,
ब्रह्मा सावित्री रूप निहारो ।
उलटि नागिनी का सिर मारो,
तहाँ सब्द ओंकारा है ॥ ४ ॥

नाभी अष्ट कँवल दल साजा,
सेत सिंघासन बिस्नु बिराजा ।
हिरिंग जाप तासु मुख गाजा,
लक्ष्मी सिव आधारा है ॥ ५ ॥

द्वादस कंवल हृदय के माहीं,
जंग गौर सिव ध्यान लगाई ।
सोहं शब्द तहाँ धुन छाई,
गन करैं जैजैकारा है ॥ ६ ॥

दो दल कँवल कंठ के माहीं,
तेहि मध बसे अविद्या बाई ।
हरि हर ब्रह्मा चंवर दुराई,
जहं श्रृंग नाम उच्चारा है ॥ ७ ॥

ता पर कंज कंवल है भाई,
बग भौंरा दुई रूप लखाई ।
निज मन करत तहाँ ठकुराई,
सो नैनन पिछवारा है ॥ ८ ॥

कँवलन भेद किया निर्वारा,
यह सब रचना पिंड मंझारा ।
सतसंग कर सतगुरु सिर धारा,
वह सत नाम उचारा है ॥ ९ ॥

आँख कान मुख बंद कराओ,
अनहद झिंगा शब्द सुनाओ ।

दोनों तिल एक तार मिलाओ,
तब देखो गुलज़ारा है ।। १० ।।

चंद सूर एकै घर लाओ,
सुषमन सेती ध्यान लगाओ ।
तिरवेनी के संध समाओ,
भोर उतर चल पारा है ।। ११ ।।

घंटा संख सुनो धुन दोई,
सहस कंवल दल जगमग होई ।
ता मध करता निरखो सोई,
बंकनाल धस पारा है ।। १२ ।।

डाकिनी साकिनी बहु किलकारें,
जम किंकर धर्म दूत हकारें ।
सत्तनाम सुन भागें सारे,
जब सतगुरु नाम उचारा है ।। १३ ।।

गगन मंडल बिच उर्धमुख कुइया,
गुरुमुख साधू भर २ पीया ।
निगुरे प्यास मरे बिन कीया,
जा के हिय अंधियारा है ।। १४ ।।

त्रिकुटी महल में विद्या सारा,
धनहर गरजें बजे नगारा ।
लाल बरन सूरज उजियारा,
चतुर कँवल मंझार सब्द ओंकारा है ।। १५ ।।

साध सोई जिन यह गढ़ लीन्हा,
नौ दरवाज़े परगट चीन्हा ।
दसवां खोल जाय जिन दीन्हा,
जहां कुलुफ़ रहा मारा है ।। १६ ।।

आगे सेतु सुन्न है भाई,
मानसरोवर पैठि अन्हाई ।
हंसन मिलि हंसा होइ जाई,
मिलै जो अमी अहारा है ॥ १७ ॥
किंगरी सारंग बजै सितारा,
अच्छर ब्रह्म सुन्न दरबारा ।
द्वादस भानु हंस उजियारा,
खट दल कँवल मंझार सब्द ररंकारा है ॥ १८ ॥
महा सुन्न सिंध बिषमी घाटी,
बिन सतगुरु पावै नहीं बाटी ।
ब्याघर सिंघ सरप बहु काटी,
तहँ सहज अचिंत पसारा है ॥ १९ ॥
अष्ट दल कँवल पारब्रह्म भाई,
दहिने द्वादस अचिंत रहाई ।
बायें दस दल सहज समाई,
यों कंवलन निरबारा है ॥ २० ॥
पाँच ब्रह्म पाँचों अंड बीनो,
पाँच ब्रह्म निःअच्छर चीन्हो ।
चार मुकाम गुप्त तहँ कीन्हो,
जा मध बंदीवान पुरुष दरबारा है ॥ २१ ॥
दो पर्वत के संध निहारो,
भँवरगुफा तेहि संत पुकारो ।
हंसा करते केल अपारो,
तहाँ गुरन दरबारा है ॥ २२ ॥
सहस अठासी दीप रचाये,
हीरे पन्ने महल जड़ाये ।
मुरली बजत अखंड सदाये,
तहँ सोहं झनकारा है ॥ २३ ॥

सोहं हद्द तजी जब भाई,
सत्तलोक की हद पुनि आई।
उठत सुगंध महा अधिकाई,
जा को वार न पारा है॥ २४॥

षोड़स भानु हंस को रूपा,
बीना सत धुन बजे अनूपा।
हंस करत चँवर सिर भूपा,
सत्त पुरुष दरबारा है॥ २५॥

कोटिन भानु उदय जो होई,
एते ही पुनि चन्द्र लखोई।
पुरुष रोम सम एक न होई
ऐसा पुरुष दीदारा है॥ २६॥

आगे अलख लोक है भाई,
अलख पुरुष की तहँ ठकुराई।
अरबन सूर रोम सम नाहीं,
ऐसा अलख निहारा है॥ २७॥

ता पर अगम महल इक साजा,
अगम पुरुष ताही को राजा।
खरबन सूर रोम इक लाजा,
ऐसा अगम अपारा है॥ २८॥

ता पर अकह लोक है भाई,
पुरुष अनामी तहाँ रहाई।
जो पहुँचा जानेगा वाही,
कहन सुनन तें न्यारा है॥ २९॥

काया भेद किया निर्वारा,
यह सब रचना पिंड मँझारा।
माया अवगति जाल पसारा,
सो कारीगर भारा है॥ ३०॥

आदि माया कीन्ही चतुराई,
झूठी बाज़ी पिंड दिखाई।
अवगति रचन रचो अँड माहीं,
ता का प्रतिबिंब डारा है॥ ३१॥

शब्द बिहंगम चाल हमारी,
कहै कबीर सतगुरु दई तारी।
खुले कपाट सब्द झनकारी,
पिंड अंड के पार सो देस हमारा है॥ ३२॥

संत कबीर साहब के उक्त पद से विदित होता है कि उन्होंने पिण्ड, ब्रह्माण्ड और दयाल देश का विस्तृत विवरण, अपनी वाणी में किया है, और ऊँचे से ऊँचे धाम का भेद खोलकर वर्णन किया है। यह बात दूसरी है कि उस समय उन्होंने सत्तलोक से ऊपर का उपदेश नहीं किया, और यह कार्य राधास्वामी दयाल के अवतार परम संत स्वामीजी महाराज के लिए छोड़ रक्खा। संत कबीर साहब ने एक स्थान पर फ़रमाया है

'कहैं कबीर हम धुर के भेदी
लाये हुकुम हुज़ूरी''

और यह भी फ़रमाया है कि

''काशी में हम प्रकट भये हैं, रामानन्द चेताये।
समरथ का परवाना लाये, हंस चेतावन आये॥''

उपरोक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि संत कबीर साहब धुर धाम के भेदी थे और कुल्ल मालिक के आदेशानुसार संत मत का प्रवर्तन करने हेतु अनामी धाम से, इस पृथ्वी तल पर अवतरित हुये थे। एक अन्य पद में संत कबीर साहब ने फ़रमाया है :—

मेरी नज़र में मोती आया है॥ टेक॥
कोइ कहे हलका कोइ कहे भारी, दूनों भूल भुलाया है॥ १॥